राज्य अध्याय 27

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शान्त समय)*** **भजन.115,119:1-88, 119:89-176 और 139**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 115,119:1-88; 119:89-176 और 139) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर की महानता)*** **(3) इफिसियों 1:11-12**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन करें।***

(3) परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ हैं। इफिसियों 1:11-12। उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने कि हम, जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्तुति के कारण हों।

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट) ***(यीशु के दृष्टान्त)*** **दूल्हा, पैबन्द लगा वस्त्र और मशकें**

मत्ती 9:14-17 में लिखे "दूल्हे, पैबन्द लगे वस्त्र और मशकों के दृष्टान्त"

परमेश्वर के राज्य में उपवास के विषय में बताता है।

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों की उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेगें (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें मत्ती 9:14-17, मरकुस 2:18-22 और लूका 5:33-39.

मत्ती 9:15-17 में, यीशु ने मसीहियों को उपवास के विषय में शिक्षा देने के लिये तीन बहुत ही छोटे दृष्टान्तों का इस्तेमाल कियाः

दूल्हे का दृष्टान्त : "क्या बाराती, जब तक दूल्हा उनके साथ है, शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आएँगे जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे।"

पैबन्द लगाए हुए वस्त्र का दृष्टान्त : "नये कपड़े का पैबन्द पुराने वस्त्र पर कोई नहीं लगाता; क्योंकि वह पैबन्द वस्त्र से और कुछ खींच लेता है, और वह अधिक फट जाता है।"

मशकों का दृष्टान्त : "नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरते हैं, क्योंकि ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं, और दाखरस बह जाता है और मशकें नाश हो जाती हैं। लूका अपनी पुस्तक के 5:39 में इस बात को भी इस दृष्टान्त में जोड़ा, "कोई मनुष्य पुराना दाखरस पीकर नया नहीं चाहता क्योंकि वह कहता है, कि पुराना ही अच्छा है।"

परमेश्वर के राज्य में उपवास के महत्व को बताने के लिए इस शिक्षा को तीन बार दोहराना बहुत ज़रूरी है!

---

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

एक दूल्हा और उसके बाराती। पहला दृष्टान्त (तुलना)। दूल्हा और बाराती, विवाह में जो आनन्द मनाते हैं वह संसार के प्रत्येक समाज में एक आम वास्तविकता है।

नये कपड़े का पैबन्द। दूसरा दृष्टान्त (तुलना)। कपड़े बनाने वाले सभी लोग जानते हैं कि जब एक पुराने और बुरी तरह से पहने हुए कपड़े के छेद पर नये कपड़े का पैबन्द लगाया जाता है तो वह कपड़े को सिकोड़ और फाड़ देता है।

मशकें। तीसरा दृष्टान्त (तुलना)। एक मशक आमतौर पर बकरी या भेड़ की खाल से बनी होती है। चमड़े को जानवर से अलग करने के बाद सुखाया जाता है। बालों को बहुत छोटा काटा जाता है और फिर चमड़े को बाहर से भीतर की ओर पलटा जाता है। फिर चारों पैर और पूछँ के छेदों को डोरियों से बन्द कर दिया जाता है और गर्दन का छेद पात्र का मुँह बनता है।

नया दाखरस। नए दाखरस में हमेशा खमीर पैदा होता है। इसलिए यदि नए दाखरस को पुरानी मशकों में भरा जाएगा तो खमीर के दबाव से मशक फट जाएगी और परिणामस्वरूप मशक और दाखरस दोनों का नुकसान होगा।

---

2. सन्दर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और "व्याख्या या अनुप्रयोग" हो सकते हैं। दृष्टान्त की *परिस्थिति* दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल या उपलक्ष्य* के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) **इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती 9:14-17 में पायी जाती है।**

इन दृष्टान्तों को मत्ती, मरकुस और लूका तीनों सुसमाचारों में मत्ती (लेवी) की बुलाहट के तुरन्त बाद बताया गया है। यदि इन दोनों घटनाओं के बीच अस्थाई सम्बन्ध था, तो पुराने और नए के बीच तुलना नाटकीय रूप से बढ़ जाती है। जिस समय यीशु और उनके चेले मत्ती के घर में कई चुंगी लेनेवाले और पापियों के साथ भोजन कर रहे थे, उसी समय यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और फरीसियों के चेले उपवास कर रहे थे!

लेकिन भले ही इन दोनों घटनाओं के बीच कोई कालानुक्रमिक सम्बन्ध नहीं था, लेकिन निश्चित रूप से एक तार्किक सम्बन्ध है। तथ्य यह है कि यीशु और उनके शिष्यों की एक से अधिक अवसरों पर चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ संगति थी (मत्ती 11:19; लूका 7:34; 15:1; 19:1-10)। लेकिन यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और फरीसियों के चेले इस तरह के जोशीले उत्सवों से दूर रहते और यहाँ तक कि कठोर नियमों का अभ्यास भी करते थे। यह तुलना पहले या बाद में उपवास के प्रश्न का नेतृत्व करने के लिए बाध्य हो गई।

(2) **इन दृष्टान्तों की कहानियाँ मत्ती 9:15-17 में लिखी हुई है।**

(3) **इन दृष्टान्तों की व्याख्या और उनका अनुप्रयोग नहीं दिया गया है।**

इनकी व्याख्या और अनुप्रयोग कहानियों और परिस्थितियों से निकाली जानी चाहिए।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय ज़रूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें व चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

यीशु इन दृष्टान्तों में किसी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते। विवरण की प्रासंगिकता इन शब्दों का बाइबल के अन्य भागों में अर्थ और संदर्भ के अनुसार है।

दूल्हा। बाइबल अक्सर परमेश्वर और उनके लोगों या मसीह और कलीसिया के बीच सम्बन्ध की तुलना दूल्हा और दुल्हन के प्रेम सम्बन्ध से करती है (यशायाह 54:1,5; 62:5; यिर्मयाह 31:32; मत्ती 25:1 ff; यूहन्ना 3:29; 2 कुरिन्थियों 11:2; इफिसियों 5:32; प्रकाशितवाक्य 19:7; 21:9)। 2 कुरिन्थियों 11:2 और इफिसियों 5:32 के अनुसार, "दूल्हा" यीशु मसीही को दर्शाता है और "दुल्हन" मसीही कलीसिया को दर्शाती है। यीशु ने स्वयं की उपस्थिति की तुलना पृथ्वी पर विवाह के भोज से की। यह प्रश्न ''क्या बाराती तब तक शोक मना सकते हैं जब तक दूल्हा उन के साथ है?'' इतना स्पष्ट है कि इसका उत्तर होना चाहिए ''नहीं, वे तब तक शोक नहीं मना सकते जब तक कि दूल्हा उन के साथ है!'' यह प्रासंगिक विवरण है।

बाराती। शाब्दिक रूप से ''विवाह के भवन में बाराती'' दूल्हे के मेहमानों को दर्शाते हैं जो दूल्हे के पास खड़े होते हैं और विवाह में एक आवश्यक भूमिका निभाते हैं। वे विवाह के उत्सव को सफल बनाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। वे मसीहियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह प्रासंगिक विवरण है।

पुराना वस्त्र। यीशु इस विवरण को कोई विशिष्ट अर्थ नहीं देते हैं। लेकिन संदर्भ से यह स्पष्ट होता है कि पुराना वस्त्र पुराने नियम का प्रतिनिधित्व करता है जैसा कि फरीसियों द्वारा पारित किया गया था; चीज़ों का

पुराना क्रम जो कि धार्मिक अगुवों के द्वारा लागू किया गया था, उदाहरण के लिए उपवास की पुरानी प्रणाली के साथ–साथ अन्य व्यवहारिक अनुप्रयोग जो कि फरीसियों के द्वारा पुराने नियम की अनुष्ठानिक व्यवस्था से लिए गए थे।

नये वस्त्र का पैबन्द। यीशु द्वारा इस विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं दिया गया। लेकिन संदर्भ से यह स्पष्ट होता है कि ''नये वस्त्र का पैबन्द'' यीशु और प्रेरितों द्वारा प्रगट किए गए नये नियम का प्रतिनिधित्व करता है; चीज़ों का नया क्रम जो कि परमेश्वर के द्वारा स्थापित किया गया, विशेषरूप से मसीह में परमेश्वर का उद्धार। संदेश यह है कि जिस प्रकार नये वस्त्र का पैबन्द पुराने वस्त्र पर नहीं लगाया जा सकता, उसी प्रकार चीज़ों का नया क्रम पुराने क्रम के साथ तालमेल नहीं खाता! यह प्रासंगिक है क्योंकि यह दृष्टान्त का मुख्य संदेश है।

पुराना दाखरस और पुरानी मशकें। यीशु इन विवरणों की कोई व्याख्या नहीं करते हैं। लेकिन संदर्भ से यह पता चलता है कि ''पुराना दाखरस'' यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और फरीसियों के चेलों के नियम कानून और आनन्दहीनता और उपवास का प्रतिनिधित्व करता है। ''पुरानी मशकें'' यहूदियों की पुरानी अनुष्ठानिक व्यवस्था के तौर तरीक़ों को प्रगट करने, जैसे उपवास के दिनों और उपवास का अभ्यास करने का प्रतिनिधत्व करतीं हैं।

विस्तार से, ''पुराना दाखरस'' यहूदी धर्म की विषय वस्तु का भी प्रतिनिधित्व करता है, जिनमें यहूदी गुरूओं द्वारा व्याख्या किए गए सैकड़ों नियम कानून थे जिन्हें ''पुरनियों की परंपरा'' कहा गया। ''पुरानी मशकें'' यहूदियों की मानव द्वारा नियोजित प्रथाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं जिन्हें धर्म प्रणाली में अटल परम्पराओं के रूप में नियोजित किया गया था। यहूदी धर्म प्रणाली में सब्त के दिन, उपवास के दिन, विशेष धार्मिक पर्व, और यरूशलेम की तीर्थ यात्रा, बलिदान, सब चीजों का दसमांश देना, खतना, धोने और खाने के नियम शामिल थे।

नया दाखरस और नई मशकें। यीशु इन विवरणों की व्याख्या नहीं करते हैं। लेकिन संदर्भ से यह स्पष्ट है कि ''नया दाखरस'' मसीह में उद्धार और आशीषों का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए है जो उन्हें स्वीकार करने के लिए इच्छुक हैं। और ''नई मशकें'' उद्धार और मसीह में नए जीवन को व्यक्त करने के नए तरीकों का प्रतिनिधित्व करती हैं अर्थात् आनन्द और धन्यवाद के साथ।

वे उस नए तरीके का प्रतिनिधित्व करती हैं जिसमें मसीही लोग परमेश्वर से सम्बन्ध रखते हैं और स्वतन्त्र और सहज रूप से परमेश्वर की सेवा और आराधना करते हैं। मसीही धर्म में उद्धार, छुटकारा, नवीनीकरण और पूर्ण परिवर्तन शामिल हैं। उनका धार्मिक रूप मसीहियों के एक ऐसे समाज को व्यक्त करता है जो धन्यवादी और आनन्दित हैं, जो परमेश्वर की आराधना और सेवा इच्छुक होकर और उत्सुकता से करें।

यह कहना सही नहीं है कि ''पुराना दाखरस'' व्यवस्था के कर्मों द्वारा उद्धार का प्रतीक है और ''नया दाखरस'' अनुग्रह के द्वारा उद्धार का प्रतीनिधित्व करता है। इसके विपरीत तुलना, चीजों के पुराने क्रम जो कि अक्सर स्पष्ट रूप से इस्त्राएल के धार्मिक अगुवों द्वारा निर्मित मानव संस्थित थे और चीजों के नए क्रम जिनमें यीशु मसीह की शिक्षाएँ शाामिल हैं, के बीच है। तुलना स्पष्ट रूप से मनुष्यों द्वारा निर्मित परम्पराओं (मानव निर्मित कानून और नियम) और अलौकिक शिक्षाओं (बाइबल में) के बीच है!

तुलना पुराने नियम और नए नियम के बीच नहीं है, क्योंकि पुराने नियम की शिक्षाओं (व्यवस्थाविवरण 6:5; लैव्यव्यवस्था 19:18) और नए नियम में यीशु मसीह की शिक्षाओं के बीच नियमितता थी (मरकुस 12:30–31)। हालाँकि, व्यवस्था के यहूदी शिक्षकों और फरीसियों ने पुराने नियम की सच्ची शिक्षाओं को मानव निर्मित परम्पराओं (कानून और नियमों) के पहाड़ के नीचे दफ़ना दिया था। तुलना फरीसियों की कठोर परम्पराओं और बाइबल की सत्य शिक्षाओं के बीच है। उपवास और शोक के पुराने तरीके ने आनन्द को पूर्ण रूप से बाहर कर

दिया, लेकिन परमेश्वर से सम्बन्ध और परमेश्वर की सेवा का नया तरीका उद्धार का आनन्द है!

कोई मनुष्य पुराना दाखरस पीकर नया नहीं चाहता क्योंकि वह कहता है, कि ''पुराना ही अच्छा है'' (लूका 5:39)। वास्तव में यीशु मसीह ने जो नया तरीका प्रस्तुत किया वह ''पुराने'' (मूल) शब्द का सर्वोत्तम अर्थ प्रदान करता है, क्योंकि यह पुराने नियम की आवश्यक शिक्षा को पुनःस्थापित करता है। भजन 23:5–6 ''तू मेरे शत्रुओं के सामने मेरे लिए मेज लगाता है'' और यशायाह 61:7, ''तुम्हारी नामधराई के बदले दूना भाग मिलेगा, अनादर के बदले तुम अपने भाग के कारण जयजयकार करोगे; तुम अपने देश में दूने भाग के अधिकारी होगे; और सदा आनन्दित बने रहोगे'' की तुलना करें! तूने मेरे सिर पर तेल मला है; मेरा कटोरा उमड़ रहा है। निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ–साथ बनी रहेगी और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूगाँ!'' वास्तविक आनन्द और सिद्ध महिमा पाने का एकमात्र तरीका केवल वह है जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की और जो स्वयं परमेश्वर करता है न कि वह जो धार्मिक लोग अपने धार्मिक नियम कानूनों और धार्मिक अभ्यासों के द्वारा सिखाते हैं!

हालाँकि फरीसियों ने प्राचीनों की परम्परा का उल्लेख ''पुराने दाखरस'' शब्द के रूप में किया। यह शब्द फरीसियों और उनके अनुयायियों के अत्यंत रूढ़ीवाद और गहरे और अटल परम्परावाद पर एक टिप्पणी है। वे अपने स्वयं के निर्णयों और दृष्टिकोण पर अड़े रहे जबकि परमेश्वर के वचन को अस्वीकार करते रहे जो कि पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं और नए नियम में यीशु मसीह के द्वारा सिखाया गया (मत्ती 15:6–9)। उन्होंने इस बात पर विश्वास नहीं किया कि यीशु मसीह ने अपने प्रथम आगमन में *व्यवस्था को हर प्रकार से पूरा किया* (मत्ती 5:17; इफिसियों 2:15; कुलुस्सियों 2:14)। उन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह से बढ़कर मानव निर्मित कानूनों का चुनाव किया। उन्होंने परमेश्वर के वचन से बढ़कर मानव निर्मित परम्पराओं को प्राथमिकता दी। उन्होंने परमेश्वर की ताज़ी हवा से बढ़कर मानव निर्मित घुटन को चाहा। उन्होंने आंतरिक परिवर्तन की कीमत पर बाहरी धर्म को अधिक पसन्द किया। यह स्पष्ट है कि उन्हें हृदय के कट्टर परिवर्तन की आवश्यकता थी। लेकिन सभी परिवर्तन दर्दनाक होते हैं क्योंकि इसके लिए स्वयं का इंकार करने की, ''स्वयं'' के लिए मरने की और किसी को अपने स्वयं के विचारों और धार्मिक परम्पराओं के लिए मरने की आवश्यकता होती है।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है की हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। *दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात एक केन्द्र बिन्दू होता है।* इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूंढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 9:14–17 में दूल्हे, कोरे कपड़े का पैबंद और मशकों के दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में उपवास'' के विषय में हैं।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। चीजों का नया तरीका जिसका परिचय यीशु मसीह ने अपने प्रथम आगमन में दिया, वह चीजों के पुराने तरीकों से मेल नहीं खाता जिनमे मानव निर्मित परंपराएँ और बोबीलोन से निकलने के बाद फरीसियों द्वारा सिखाए गए मानव निर्मित नियम शामिल थे। चीजों के पुराने तरीकों में प्राचीनों (रब्बियों) की परंपराओं को, शोक और उपवास जैसी मानव–संचालित धार्मिक प्रथाओं के रूप में व्यक्त किया गया है। चीजों के नए तरीके में उद्धार, चंगाई, पुर्नस्थापना, परिवर्तन और लोगों का नवीनिकरण शामिल है, जो यीशु मसीह के रूप में आयोजित किया गया जैस, उद्धार का आनंद।

चीजों का पुराना क्रम *प्राचीनों की परंपराओं* के द्वारा निर्धारित किया गया था (देखें नियमावली 11 अध्याय 25)। प्राचीनों की परंपराओं में उपवास बहुत शामिल था। उपवास किसी के पापों पर शोक व्यक्त करने की एक अभिव्यक्ति था, लेकिन वास्तव में यह परमेश्वर की भक्ति का ढ़ोग और दिखावा बन गया था (मत्ती 6:16)। यूहन्ना के चेले और फरीसियों के चेले सप्ताह में दो बार उपवास किया करते थे (लूका 18:12)!

मत्ती 11:4-5 और लूका 4:18-19 में चीजों के नए क्रम को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया हैः चीजों के नए क्रम में, बीमारों की चंगाई, विकलांगों का पुर्नस्थापन, दुष्टात्मा ग्रस्तों का स्वतंत्र होना, मुर्दों का जी उठना, कंगालों को सुसमाचार सुनाना, परमेश्वर के पक्ष (अनुग्रह) की घोषणा करना जैसी चीजें शमिल हैं। उद्धार का आनंद अपने सभी रूपों में शोक और उपवास के सभी रूपों के साथ मेल नहीं खाता, जैसा कि यीशु के प्रथम आगमन को एक महान घटना के रूप में देखा जाना चाहिए जो कि लोगों के साथ घटी!

उद्धार का आनंद परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग यूहन्ना और फरीसियों के चेलों के समान उपवास और शोक नहीं करते, लेकिन वे अपने उद्धार की वास्तविकता के कारण यीशु मसीह की उपस्थिति में आनंदित होते है। जबकि उपवास के पुराने तरीके ने आनंद को पूर्ण रूप से दूर कर दिया था, उद्धार के आनंद ने परमेश्वर के साथ नए संबंध और परमेश्वर की सेवा के नए तरीके का परिचय दिया! मसीही विशेष रूप से गाने और संगीत के द्वारा आनंद व्यक्त करते हैं (भजन 33:1-4)!

बेशक इसका यह अर्थ नहीं है कि मसीहियों के लिए सांसर के सताव, अपनी समस्याओं में दुःखी होना या अपने स्वयं के पाप या किसी प्रिय जन की हानि पर शोक करने का कोई स्थान नहीं है। यीशु वास्तविक दुःख, शोक और उपवास के विरूद्ध नहीं बोल रहे, लेकिन इस्त्राएल के लोगों के उपवास और शोक के बाहरी धार्मिक ढोंग और दिखावे के बारे में बोल रहे हैं। तुलना पूर्ण रूप से मानवीय संस्थानो और अलौकिक शिक्षा के बीच है।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।
खोजें और चर्चा करें। ये गद्यांश, दृष्टान्त में दिये गये सत्य का किस प्रकार समर्थन करते या शिक्षा देते हैं?

सिखाएं। उपवास (इब्रानीः टसोम, यूनानीः नेस्टुओ) *आत्मिक उद्देश्यों के लिए भोजन से स्वैच्छिक परहेज* है। उपवास भूख हड़ताल से अलग है, जिसका उद्देश किसी विशेष कारण की ओर ध्यान आकर्षित करना है, सामान्यतः एक राजनैतिक कारण। उपवास भूखे रहने से भी अलग है, जिसका उद्देश्य वजन कम करना या शारीरिक स्वास्थ को बढ़ावा देना होता है। साधारण उपवास में केवल भोजन से परहेज शामिल था पानी से परहेज शामिल नहीं था। साधारण उपवास के तरीके में केवल एक दिन उपवास करना शामिल था, लंबे समय तक उपवास करना शामिल नहीं था।

(1) **व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में उपवास के विषय में मूल शिक्षा (पुराना नियम)।**
पढ़ें लैव्यव्यवस्था 16:29-34; 23:26-32 (1446 ई.पू.); गिनती 29:7 (1407 ई.पू.) और यशायाह 58:6:12 (740-680 ई.पू.)।
खोजें और चर्चा करें। उपवास का मूल अर्थ और उपवास की अवधि क्या थी।

दो इब्रानी शब्द हैं जिनकी पहचान करना महत्वपूर्ण है। इब्रानी शब्द ''इन्ना नेपहिश'' अर्थात किसी की आत्मा को नम्र करना, किसी की आत्मा को दबाना, किसी का स्वयं का इंकार करना)। और इब्रानी शब्द ''टसोम'' का अर्थ है उपवास या भोजन खाने से परहेज करना।

पुराने नियम की अवधि के दौरान (1446–1407 ई.पू) व्यवस्था इस्त्राएल के लोगों से यह मांग करती थी के वे पूरे वर्ष में एक दिन अपनी आत्मा को नम्र करें! यह प्रयश्चित का दिन था (सातवें महीने का दसवां दिन)। इस दिन को सब्त का दिन, पूर्ण विश्राम का दिन माना जाता था, आर्थात, सभी को ऐसे कार्यों को कारने से परहेज करना पड़ता था जिसकी व्याख्या सामान्य जीवन के कार्यों के रूप में की जा सकती थी। प्रयश्चित के दिन, इस्त्राएल के लोगों को यह आज्ञा दी गई थी कि वे अपने आप को नम्र करें ताकि वे इस बात के प्रति और अधिक जगरूक रहें कि वे परमेवर के मापदंड से बहुत दूर हो चुके हैं! प्रयश्चित का दिन स्वयं को जाँचने, स्वयं को नम्र करने, अपने पापों का अंगीकार करने और अपने पापों के लिए प्रयश्चित करने का दिन था। यह स्वयं का इंकार करने का दिन था। हालाँकि उस दिन किसी भी कार्य को करना वर्जित था लेकिन खाना खाने के लिए स्पष्ट रूप से कोई मनाही नहीं थी। भोजन से परहेज करना स्वंय का इंकार करने, स्वयं को नम्र करने का एक तरीका था, लेकिन यह निश्चित रूप से मुख्य तरीका नहीं था!

यशायाह भविष्यद्वक्ता (740–680 ई.पू) (परमेश्वर के वचन) ने सिखाया कि दुष्टता और निर्दयता से परहेज करना स्वयं का इंकार करने, स्वयं को नम्र करने का तरीका था। जिस प्रकार के उपवास का चुनाव परमेश्वर करते हैं वह यह है कि एक मनुष्य स्वयं का इंकार करे और स्वयं को नम्र करे अन्याय से परहेज करने के द्वारा और इसके बजाय सताए हुओं को स्वतंत्र करे, दासत्वता के जूओं को तोड़े, अनाथों और मारे मारे फिरने वालों को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहनाना। वह अन्धेर करना, उँगली उठाना और दुष्ट बातें बोलना छोड दे, भूखों को भोजन दे और दीन दुखियों को संतुष्ट करे। (यशायाह 58:6–12)

(2) बाइबल की ऐतिहासिक किताबों में उपवास के आभ्यास के विकास का ऐतिहासिक वर्णन।

पढ़ें यशायाह 58:3,5 और भजन. 35:13 (1000–400 ई.पू.)।

खोजें और चर्चा करें। इस्त्राएल के इतिहास में उपवास का अर्थ और अवधि कैसे बदल गई, जब कि इसकी आवश्यकता भी नहीं थी ?

उपवास का अर्थ धीरे धीरे बदल गया। धीरे–धीरे आत्मा की पीड़ा या *आंतरिक* नम्रता भोजन का परहेज (उपवास) बन गई। *आत्मा* को नम्र करना शारीरिक उपवास बन गया। भजन और यशायाह की पुस्तक में ये दो शब्द बारीकी के साथ जुड़े हुए हैं। लेकिन इससे बढ़कर ''आत्मा को नम्र करना या पीड़ित करना'' (इब्रानीः इन्ना नेपहिश) शब्द का मूल अर्थ ''उपवास'' (इब्रानीः टसोम) के लिए पर्याय बन गया।

अंत में राजाओं के बीच की अवधि (740–680 ई.पू) में इन दोनों शब्दों का प्रयोग समान अर्थ के लिए किया जाने लगा। और भजन 35:13 में ''उपवास'' वह माध्यम था जिसके द्वारा आत्मा को पीड़ित किया गया। इस प्रकार मूल अर्थ ''आत्मा को नम्र करना या पीड़ित करना'' को एक विश्राम के दिन स्वयं को जाँचने, परमेश्वर के सामने *स्वयं को नम्र करने,* अपने पापों का अंगीकार करने और स्वयं के पापों के लिए पश्चयाताप करने के रूप में व्यक्त किया गया था, लेकिन अब यह एक ऐसे दिन के रूप में प्रगट कर दिया गया है जिसमें लोग *बाहरी रूप से* जीवन की सुख सुविधाओं और स्वयं का इंकार करते हैं अर्थात एक उपवास के दिन में! बाहरी रूप से भोजन से परहेज का दिखावा और अधिक महत्वपूर्ण हो गया!

पूर्व के लोगों के लिए उपवास आपदाओं और मृत्यु से जुड़ा था। इसलिए, शोक के अवसर पर (1शमूएल 31:13; 2शमूएल 3:35) और राष्ट्र दिवस पर उपवास करना परंपरागत था (न्यायियों 20:26; 1शमूएल 7:6; एस्तेर 4:16)। स्वयं को जाँचने, स्वयं को नम्र करने, पापों का अंगीकार करने और पापों का पश्चयाताप करने

से बढ़कर, भोजन से परहेज करना आत्मा को पीड़ित करने का माध्यम बन गया।

उपवास का बढ़ना। समय के साथ इस्त्राएल में उपवास का प्रचलन बढ़ने लगा।

- राजाओं की अवधि की शुरूआत में (लगभग 931 ई.पू) उपवास केवल एक दिन के लिए सूर्योदय से सूर्यास्त तक (2शमूएल 1:12) और सात दिन के लिए (1शमूएल 31:11-13) हुआ करता था।
- राजाओं की अवधि के अंत में (586 ई.पू) 40 दिन के लिए अलौकिक और पूर्ण उपवास हुआ करता था (1राजाओं 19:8)।
- दानिय्येल के समय में 3 सप्ताह के लिए आंशिक उपवास हुआ करता था (दानिय्येल 10:3)।
- और निर्वासन के अंतिम समय में 520-518 ई.पू) पाँचवें और सातवें महीने के दौरान उपवास हुआ करता था (जकर्याह 7:3-5), और जल्द ही प्रत्येक वर्ष के पाँचवे, सातवें और दसवें महीने के दौरान उपवास होने लगे (जकर्याह 8:19)!
- अंत में यीशु मसीह के प्रथम आगमन पर, हर सप्ताह में दो बार उपवास हुआ करता था, जिसका अभ्यास फरीसियों द्वारा किया गया (लूका 18:12)।

लैव्यव्यवस्था 16:29-34 में परमेश्वर द्वारा पुराने नियम के लोगों के लिए स्वयं की आत्मा को नम्र करने (जिसमें भोजन से परहेज करना शामिल हो सकता है) को छोड़ कर, बाकि के सारे उपवास पूर्णरूप से मानव निर्मित सांस्थान थे, परमेश्वर द्वारा नियोजित नहीं! ये सभी उपवास ''प्राचीनों की परंपरा'' का भाग थे (तुलना करें मरकुस 7:1-13 से)!

(3) बाइबल में उपवास का उद्देश्य।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के इतिहास में उपवास के क्या उद्देश्य थे?

जबकि बाइबल में ''उपवास'' भोजन से परहेज के अर्थ में *वर्णित* है, यह निश्चित रूप से परमेश्वर के लोगों के लिए *आवश्यकता के रूप में नहीं सिखाया गया,* संभावित रूप से पश्चयाताप के दिन को छोड़ कर। ये सभी ''उपवास'' पूर्ण रूप से मनुष्यों द्वारा संस्थापित थे परमेश्वर द्वारा नियोजित नहीं। समय के साथ यह इस्त्राएली संस्कृति का हिस्सा बन गए, जिसे परमेश्वर के राज्य की संस्कृति समझ कर भ्रमित नहीं होना चाहिए।

यीशु मसीह और कलीसिया के अगुवों के उपवास के उदाहरण का अनुसरण किया जा सकता है, लेकिन अन्य मसीहियों या संपूर्ण कलीसिया के लिये यह अनिर्वाय नहीं है।

उपवास दीनता की एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति थी। *पढ़ें* नहेम्याह 9:1-3 में (लगभग 400 ई.पू) ऐतिहासिक विवरण को। उपवास दीनता की एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति थी जिसके दौरान एक व्यक्ति अपने पापों के लिए शोक और अपने पापों का अंगीकार किया करता था। यह अक्सर टाट पहनने या सिर पर राख या धूल डालने के साथ होता था। उपवास के दौरन इस्त्राएली अपने पापों का अंगीकार और अपने पूर्वजों की दुष्टता का अंगीकार किया करते थे।

उपवास विलाप करने की एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति थी। *पढ़ें* 2शमूएल 1:11-12 और 2इतिहास 20:2-4 में ऐतिहासिक विवरण को। उपवास विलाप की एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति था, जिसके दौरान लोगा अपनी हानि और आने वाले खतरों के लिए विलाप किया करते थे। यह कभी-कभी रोने और अपने कपड़े फाड़ने के साथ होता था। राजा दाऊद और उसके जनों ने राजा शाऊल और इस्त्राएली सैनिकों की मृत्यु के लिए विलाप किया। राजा यहोशापात ने युद्ध के खतरे के कारण राष्ट्रीय उपवास की घोषणा की।

उपवास को एकाग्रता को बढ़ावा देने वाले के रूप में पाया गया। *पढ़े* मत्ती 4:2, प्रेरितों 13:2-3 और प्रेरितों 14:23 में ऐतिहासिक विवरण को। उपवास को किसी महत्वपूर्ण धार्मिक कार्य या पवित्र आत्मा के प्रति

संवेदनशीलता को बढ़ावा देने वाले के रूप में पाया गया। यह हमेशा प्रार्थना और किसी विशेष उद्देश्य के लिए परमेश्वर से मिलने के साथ संबंधित रहा है। तुलना करें निर्गमन 34:2,28 में मूसा के उपवास और व्यवस्थाविवरण 9:9,18 और 1राजाओं 19:8 में एलिय्याह के उपवास की।

लूका 4:2 दर्शाता है कि मसीह का उपवास आंशिक नहीं था लेकिन पूर्ण था। यीशु मसीह के उपवास का उद्देश्य उस कार्य की तैयारी के लिए ध्यान केंद्रित करना था जो पिता परमेश्वर ने उन्हें करने के लिए दिया था। उनके उपवास का दूसरा उद्देश्य अपने कठिन लेकिन उत्कृष्ट कार्य को पूरा करने से पहले शिक्षुता के रूप में प्रलोभन द्वारा परिक्षण था।

मड़ली के अगुवों (प्राचीनों) ने सेवकों को भेजने के संबंध में (प्रेरितों 13:2) और मड़ली में प्राचीनों को नियुक्त करने के संबंध में (प्रेरितों 14:23) उपवास किया। यह इस बात की ओर संकेत कर सकता है कि मसीही विश्वासी उपवास के दौरान पवित्र आत्मा के संचार के प्रति विशेषरूप से संवेदनशील थे।

लेकिन ध्यान दें की यह सभी उदाहरण ऐतिहासिक विवरण है कि मसीहियों ने इतिहास में क्या किया। उन्हें उपवास करने की आज्ञा नहीं मिली थी न ही सिखाया गया था! मत्ती 6:16–18 कहता है, ''जब तू उपवास करे, न की, ''तुझे उपवास करना ही है''! इसलिए मसीही लोग स्वेच्छा से उपवास कर सकते हैं, यदि उन्हें लगता है कि इससे प्रार्थना में परमेश्वर के मिलने, परमेश्वर की सलाह और परमेश्वर द्वारा दिए गए कार्य को पूरा करने के लिए स्वयं को तैयार करने में उन्हें सहायता मिलेगी। लेकिन मसीहियों को यह नहीं सिखाना चाहिए कि उपवास मसीहियों के लिए परमेश्वर की आवश्यकता है!

बाइबल गलत उद्देश्य से उपवास करने के अभ्यास को भी दर्ज करती है। *पढ़ें* 1राजा 21:9, जकर्याह 7:3–5 और यशायाह 58:1–12 में दिए गए ऐतिहासिक विवरण को। बाइबल गलत उद्देश्य से उपवास के अभ्यास को भी दर्ज करती है, चाहे वह किसी निर्दोष व्यक्ति की हत्या करना हो या फिर परमेश्वर के सामने दीनता का दिखावा करना हो। जकर्याह ने इस्त्राएल के लोगों को परमेश्वर के बजाय स्वयं के लिए उपवास करने पर डाँटा। यद्यपि परमेश्वर को उपवास की आवश्यकता नहीं थी फिर भी लोगों ने उपवास किया लेकिन परमेश्वर के लिए नहीं। यशायाह में सही प्रकार का उपवास भोजन से परहेजन नहीं, बल्कि अन्याय, सताव और दुष्टा की बातें कहने से परहेज करना है!

(4) सच्चा बाइबल आधारित उपवास भोजन से नहीं परन्तु बुराई से परहेज करना है।

पढ़ें यशायाह 58:3–13; जर्कयाह 7:4–10।

खोजें और चर्चा करें। लोगों का भोजन से परहेज के रूप में उपवास पर जोर देने के बाद, परमेश्वर ने इस्त्राएलियों से बुराई से परहेज करने की मांग की!

ध्यान दें। यशायाह 58:3–12 में परमेश्वर ने लोगों को सिखाया की सही प्रकार का उपवास क्या है जिससे वह प्रसन्न होता है।

जिस प्रकार का उपवास परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करता (यशायाह 58:3–5)। इस्त्राएल के लोगों ने पूछा, ''क्या कारण है कि हम ने तो उपवास (इब्रानी क्रियाः टसोम) रखा, और तू ने इसकी सुधि नहीं ली? हमने दुःख (इब्रानीः इन्ना नेपहिश) उठाया परन्तु तू ने कुछ ध्यान नहीं दिया?'' तब परमेश्वर ने उत्तर दिया, ''उपवास के दिन (इब्रानी संज्ञाः टसोम) तुम अपनी ही इच्छा पूरी करते हो और अपने सेवकों से कठिन कामों को कराते हो। तुम्हारे उपवास का फल यह होता है कि तुम आपस में लड़ते और झगड़ते और दुष्टता से घूँसे मारते हो। जैसा उपवास तुम आज कल रखते हो उससे तुम्हारी प्रार्थना ऊपर सुनाई नहीं देगी। जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूँ अर्थात जिस से मनुष्य अपने आप को दीन करे (इब्रानीः इन्ना नेपहिश), क्या तुम इस प्रकार करते हो? क्या सिर को झाऊ के समान झुकाना, अपने नीचे टाट बिछाना और राख फैलाने ही को तुम उपवास (इब्रानीः टसोम) और यहोवा को प्रसन्न करने का दिन कहते हो?'' परमेश्वर ने कहा की वह अपने इस्त्राएल के लोगों

के पारंपरिक उपवास के अभ्यास से प्रसन्न नहीं है!

जिस प्रकार का उपवास परमेश्वर को प्रसन्न करता है (यशायाह 58:6-12)। परमेश्वर ने कहा, ''जिस प्रकार के उपवास (इब्रानीः टसोम) से मैं प्रसन्न होता हूँ वह क्या यह नहीं: अन्याय से बनाए हुए दासों और अन्धेर सहने वालों का जूआ तोड़कर उनको छुडा लेना, और सब जूओं को टुकड़े-टुकड़े कर देना? क्या वह यह नहीं कि अपनी रोटी भूखों को बाँट देना, अनाथ और मारे-मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहनाना और अपने जातिभाइयों से अपने को ना छिपाना?'' इस प्रकार, परमेश्वर सिखाते हैं कि सच्चा बाइबल आधारित उपवास एक तरफ तो बुराई (अन्याय) से स्पष्ट रूप से दूर रहना है और दूसरी तरफ संसार में जरूरतमदों के साथ अपना भोजन और वस्त्र बाँटना है!

परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हैं कि जब उनके लोग इस प्रकार उपावस (इब्रानीः टसोम) करते हैं, यह स्वयं का इंकार करने के अर्थ में है, बुराई से दूर रहने और अपना भोजन और वस्त्र बाँटने के संबंध में, ना कि भोजन से परहेज करने के अर्थ में, तब वह उनकी प्रार्थना का उत्तर देंगे और उनके जीवन पर आशीष देंगे। वह कहते हैं, ''तब तेरा प्रकाश पौ फटने के समान चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा; तेरा धर्म तेरे आगे-आगे चलेगा, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते चलेगा। तब तू पुकारेगा और यहोवा उत्तर देगा; तू दोहाई देगा और यहोवा कहेगा मैं यहाँ हूँ।''

परमेश्वर फिर से सच्चे बाइबल आधारित उपवास को दोहराते हैं: भोजन से परहेज नहीं, बल्कि पाप करने से परहेज करना और जरूरतमदों और सताए हुओं की सहायता करने के लिए अपनी संपत्ति और प्रयासों को देना। वह कहते हैं, ''यदि तू अंधेर करना और उँगली उठाना और दुष्ट बातें कहना छोड़ दे, और उदारता से भूखों की सहायता करे और दीन दुःखियों को संतुष्ट करे, तब अंधियारे में तेरा प्रकाश चमकेगा, और तेरा घोर अंधकार दोपहर का सा उजियाला हो जाएगा।''

सच्चे बाइबल उपवास के संबंध में परमेश्वर की आशीषें एक व्यक्ति द्वारा लाए गए बलिदानों की तुलना में कहीं अधिक है। परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हैं, ''यहोवा तुझे लिए चलेगा, और आकाल के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा; और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता। तेरे वंश के लोग बहुत काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएँगे; तू पीढ़ी-पीढ़ी की पड़ी हुई नींव पर घर उठाएगा; तेरा नाम टूटे हुए बाड़े का सुधारक और पथों का ठीक करनेवाला पड़ेगा।''

निष्कर्ष। सच्चा बाइबल आधारित उपवास भोजन से परहेज पर जोर नहीं देता, बल्कि पाप और अन्याय से दूर रहने और इस संसार में जरूरतमदों के साथ अपनी संपत्ति और स्वयं को बाँटने पर जोर देता है। यशायाह 58 और जकर्याह 7 के अनुसार परमेश्वर शाब्दिक उपवास की नहीं परन्तु परमेश्वर तथा अपने पड़ोसी से प्रेम करने की मांग करते है!

(5) स्वैच्छिक उपवास अविशिष्ट रूप से किया जाना चाहिए।

पढ़ें मत्ती 6:16-18।

खोजें और चर्चा करें। मसीहियों को किस प्रकार उपवास करना चाहिए, जब वे उपवास करते है?

ध्यान दें। नये नियम में, मत्ती 6:16-18 में यीशु मसीह सिखाते हैं "जब तुम उपवास करो, तो कपटियों के समान तुम्हारे मुंह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुंह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जानें। मैं तुम से सच कहता हूं कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू उपवास करें तो अपने सिर पर तेल मल और मुंह धो, ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी जानें। इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे प्रतिफल देगा। यीशु उपवास को दीनता की अभिव्यक्ति के रूप में प्रसतुत करते हैं। उन्होंने फरीसियों के कार्य की निंदा की, जब वे अपने चेहरे को राख से ढ़क लेते जिससे लोग उनकी ईश्वरभक्ति को

देखें। यीशु ने अपने चेलों को उपवास की आज्ञा नहीं दी; न ही उन्होंने अपने चलों को उपवास करने से मना किया। यदि वे उपवास करना चाहते तो कर सकते थे, लेकिन उन्हें इसे जितना हो सके अविशिष्टरूप से करना चाहिए।

(6) उद्धार का आनंद शोक और उपवास के साथ नहीं चलता।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल ''दूल्हे'', यीशु मसीह की उपस्थिति और अनुपस्थिति के बारे में क्या सिखाती है? यह उपवास के प्रश्न से कैसे संबंधित है?

ध्यान दें। यीशु कहते हैं, ''दूल्हे के मेहमान कैसे उपवास कर सकते हैं जब तक वह उनके साथ है? लेकिन वह समय आयेगा जब दूल्हा उन से अलग कर दिया जाएगा; तब वे उपवास करेंगे।''

यीशु किस समय का जिक्र कर रहे थे? कुछ लोगों को मानना है कि वे आपने स्वर्गारोहण से लेकर दूसरे आगमन के बीच की अवधि (इस प्रकार सम्पूर्ण नए नियम की अवधि) के बारे में कह रहे थे, जबकि अन्य लोगों का मानना है कि वे अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के पश्चयात् पवित्र आत्मा के उड़ेले जाने में उनके पास आने के बीच की अवधि के बारे कह रहे थे। दूसरी व्याख्या सही है!

यीशु मसीह हर समय उपस्थित है। ***पढ़ें*** मत्ती 18:20; 25:1; 28:20; प्रकाशितवाक्य 19:7;21:9; इफिसियों 1:22-23; इफिसियों 3:16-17।

कुछ लोग मत्ती 25:1 और प्रकाशितवाक्य 19:7 और 21:9 के आधार पर यह सिखाते है कि अपने दूसरे आगमन तक दूल्हा, यीशु मसीह, अनुपस्थित है! इसलिए, वह सिखाते है कि यीशु मसीह *चाहते हैं* कि मसीही लोग नए नियम की अवधि से लेकर यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक उपवास करे।

यह सही नहीं है। सबसे पहले तो यीशु मसीह यह आज्ञा नहीं देते, न ही सिखाते हैं और न ही उन्हें इसकी आवश्यकता है की मसीही लोग उपवास करें, लेकिन वह ऐसा कहते हैं कि वे *उपवास करेंगे।* दूसरा, यीशु मसीह नए नियम की अवधि के दौरन कलीसिया से अनुपस्थित नहीं हैं क्योंकि कलीसिया उनकी देह है। और न ही वह नए नियम की अवधि के दौरान प्रत्येक विश्वासी के जीवन से अनुपस्थित हैं क्योंकि उन्होंने वादा किया था कि वे अपने पवित्र आत्मा के द्वारा इस दौरन उनके साथ रहेंगे (मत्ती 28:20; यूहन्ना 14:17-18; रोमियों 8:9-10,35,38-39; 2कुरिन्थियों 3:16-17; गलातियों 2:20; इब्रानियों 13:5-6)!

यीशु मसीह कुछ समय के लिए अनुपस्थित थे। दानिय्येल के समय में तीन सप्ताह का आंशिक उपवास हुआ करता था। (दानिय्येल 10:3)। ***पढ़ें*** यशायाह 53:7-9; यूहन्ना 16:16-22; प्रकाशितवाक्य 21:9-10; इब्रानियों 12:22-23।

कब यीशु मसीह अपने अनुयायियों से अनुपस्थित थे? यशायाह 53:8 में यह शब्द ''वह ले लिया गया'' क्रूस पर यीशु की हिंसक मृत्यु की भविष्यवाणी करता हैं। ''उस पर अत्याचार किया गया और वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया।''

''वह समय आता है जब दूल्हा उन से दूर कर दिया जाएगा'' इन शब्दों के साथ यीशु ने क्रूस पर अपनी हिंसक मृत्यु के बारे में प्रारंभिक भविष्यवाणी की। वह विशेष समय उनके चेलों के लिए शोक का समय रहा होगा। उस समय पर उपवास उनके दुःख के लिए एक उपयुक्त अभिव्यक्ति रहा होगा।

लेकिन यह दुःख लंबे समय के लिए नहीं रहा होगा। यूहन्ना 16:16-22 में यीशु ने स्वयं कहा, *''थोड़ी देर में* तुम मुझे न देखोगे (गुरूवार शाम और शुक्रवार सुबह) और फिर थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे (शुक्रवार सुबह से रविवार सुबह)।'' तब वह उन्हें समझाते हैं की उनके कहने का क्या अर्थ है। तुम रोओगे और विलाप करोगे;

परन्तु संसार आनंद करेगा। तुम शोक करोगे परन्तु तुम्हारा शोक आनंद में बदल जाएगा। तुम्हें अभी तो शोक है परन्तु मैं तुम से फिर मिलूँगा और तुम्हारे मन आनंद से भर जाएगें और कोई तुम्हारा आनंद तुम से छीन न लेगा।''

क्रूस पर चढ़ाए जाने से एक रात पहले, यीशु मसीह ने स्वयं अपने चेलों को समझाया कि दुष्ट यहूदियों के द्वारा उनका अस्वीकार किया जाना और अन्यजातियों के अधिकारी और उनके समर्थक एक साथ मिले हुए थे। उन्होने कहा कि उन्हें मृत्यु दंड के लिए दोषी ठहराया जाएगा और मार डाले जाने के लिए उन से अलग कर दिया जाएगा। यूहन्ना 16:20 के अनुसार इस समय के दौरान उनके चेले रोये होंगे और विलाप किया होगा और मत्ती 9:15 के अनुसार इस समय के दौरान उन्होंने उपवास किया होगा। इस प्रकार यीशु मसीह ने सिखाया कि मसीही लोग थोड़े समय के लिए (तीन दिन के भाग में) शोक और उपवास करेंगे जब यीशु मसीह कब्र में होंगे!

उनके मुर्दों में से जी उठने के बाद उनके चेलों ने *आनंद* किया (लूका 24:41) और उनके स्वर्ग में प्रवेश और सिंहासन पर बैठने के बाद उन्होने *बड़ा आनंद* किया (लूका 24:52)। और पवित्र आत्मा के उंड़ेले जाने के बाद (जो की यीशु का आत्मा है) (रोमियों 8:9–10) यीशु मसीह वास्तव में अपने अनुयायियों के मध्य पृथ्वी पर हर जगह उपस्थित है! इस तथ्य ने उनके शोक को आनंद में बदल दिया (यूहन्ना 16:20) और कोई भी उनके इस आनंद को छीन नहीं सकता न ही छीन पाएगा (यूहन्ना 16:22)! आत्मा फल *आनंद* है (गलातियों 5:22)।

यह यूहन्ना 14:16–19 में उनके वचन का पूरा होना है, ''मैं पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे, अर्थात सत्य का आत्म जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है; परन्तु तुम उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा। मैं (यीशु) तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूँगा, मैं तुम्हारे पास आता हूँ। और थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे।''

पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और पवित्र आत्मा के उँड़ेले जाने के साथ नए नियम की कलीसिया अस्तित्व में आयी। कलीसिया यीशु मसीह की ''दुल्हन'' है (प्रकाशितवाक्य 21:9–10; इब्रानियों 12:22–23)। और मत्ती 28:20 में यीशु वादा करते हैं और प्रकाशितवाक्य 1:12–18 इसका प्रतीक है कि जगत के अंत तक यीशु मसीह अपनी दुल्हन के साथ हर दिन है!

(7) पुराने नियम की उपवास की आवश्यकता को समाप्त कर दिया गया है।

पढ़ें कुलुस्सियों 2:14; इफिसियों 2:15; इब्रानियों 7:12।

सिखाएँ। अनुष्ठानिक व्यवस्था में खतना, बलिदान, दसवांश, नहाना–धोना और *उपवास तथा खाने पीने* के नियम शामिल थे।

क्रूस पर अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान द्वारा (30 ईस्वी) यीशु मसीह ने

- व्यवस्था को पूरा किया (मत्ती 5:17)
- व्यवस्था को बदल दिया (इब्रानियों 7:12)
- अनुष्ठानिक व्यवस्था के नियमों को समाप्त कर (रद्द, हटा) दिया (कुलुस्सियों 2:14)
- शत्रुता की विभाजनकारी दीवार को नष्ट कर दिया जिसमे अनुष्ठानिक व्यवस्था के नियम कानून शामिल थे और मसीही कलीसिया से इसे हमेशा के लिए समाप्त कर दिया (इफिसियों 2:15)!

जिस प्रकार मंदिर में जानवरों का बलिदान और दसवांश लाना, लड़कों का खतना करना, नहाना–धोना और शुद्ध

भोजन खाने की मांग अब मसीहियों से नहीं की जाती, उसी प्रकार प्रायश्चित के बड़े दिन पर मसीहियों के लिए उपवास और आत्मा को नम्र करने की आवश्यकता अब नहीं रही! खतना और बलिदान की तरह, उपवास को एक धार्मिक दायित्व के रूप में समीही कलीसिया में फिर से पेश नहीं किया जा सकता!

(8) निष्कर्ष। उपवास के विषय में निर्णायक बाइबल निम्न हैं:

यशायाह 58:6–12 इस बात पर जोर देता है कि परमेश्वर किस प्रकार के उपवास की मांग करते हैं। उपवास भोजन से परहेज करना नहीं, बल्कि अन्याय, सताव और दुष्टता की बातें कहने से परहेज करना है!

जर्कयाह 8:19 भविष्यद्वाणी करता है कि पुराने नियम के उपवास और शोक की अवधि को नए नियम अवधि के आनंद से बदल दिया जाएगा।

मत्ती 9:10–17 इस बात पर जोर देता है कि वास्तविक उद्धार का आनंद और यीशु मसीह की लगातार वास्तविक उपस्थिति उपवास के शोक के साथ नहीं चलती!

मत्ती 17:21(''लेकिन यह जाति प्रार्थना और उपवास के बिना नहीं निकलती''), मत्ती 6:13 (''क्योंकि राज्य, पराक्रम और महिमा युगानयुग तेरी ही है'') और मरकुस 16:8–20 के समान प्राचीन हस्तलेखों में काफी बाद में जोड़े गए और वास्तविक सुसमाचार का हिस्सा नहीं हैं।

मत्ती 5:17; कुलुस्सियों 2:14; इफिसियों 2:15 और इब्रानियों 7:12 बहुत स्पष्ट रूप से सिखाते हैं कि अनुष्ठानिक व्यवस्था को जिसमे उपवास भी शामिल है, पूरा कर दिया गया है इसलिए उसे रद्द और समाप्त कर दिया गया है।

मत्ती 6:16–18 सिखाता है कि यदि मसीही चाहें तो उपवास (भोजन से परहेज) कर सकते हैं, लेकिन उन्हें उपवास को अन्य मसीहियों के लिए धार्मिक दायित्व नहीं बनाना चाहिए।

---

6. **<u>परमेश्वर के राज्य में उपवास के विषय में दृष्टांत के मुख्य उपदेशों या पाठों का सारांश।</u>**

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में उपवास के बारे में दृष्टांत के मुख्य उपदेश या पाठ क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या *विश्वास करना* और क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नेलिखित है। चीजों का नया क्रम जिसका परिचय यीशु मसीह ने अपने प्रथम आगमन पर दिया, चीजों के उन पुराने क्रम के साथ मेल नहीं खाता जिनमें मानव निर्मित परंपराएं और वे नियम शामिल हैं जो फरीसियों ने बेबीलोन से निर्वासन के बाद पेश किए। चीजों के पुराने क्रम में प्राचीन लोगों (रब्बियों) की परम्पराएं शामिल थी, जिन्हें शोक और उपवास जैसे धार्मिक क्रियाकलापों के रूप में प्रगट किया गया था। नए क्रम ने पुराने क्रम का स्थान ले लिया जिसमें उद्धार, चंगाई, छुटकारा पुर्नस्थापन, परिर्वतन, और लोगों का नवीनीकरण शामिल है जिसे उद्धार के आनंद के रूप में प्रगट किया गया।

परमेश्वर शोक और उपवास की मानव–निर्मित परम्परा से प्रसन्न नहीं है। नए क्रम की शुरूआता यीशु के प्रथम आगमन से शुरू होती हैः फिर निम्नलिखत बातें वास्तविकताएँ बनती हैं: ''परमेश्वर हमारे साथ'' (इम्मानुएल, मत्ती 1:23), ''मसीह तुम में'' (गलातियों 2:20; कुलुस्सियों 1:27) और ''पवित्र आत्मा तुम में रहता है और हमेशा के लिए तुम्हारे साथ है'' (यूहन्ना 7:38–39; 14:16–17; इफिसियों 2:22)। यीशु मसीह सदैव उपस्थित है! ''निश्चय ही मैं (मसीह) जगत के अंत तक सदा तुम्हारे साथ हूँ'' (मत्ती 28:20)! पिन्तेकुस्त के बाद यह नई वास्तविकता प्रत्येक मसीही के अन्दर वास्तविक आनंद को जगृत करती है। परमेश्वर मसीहियों के उद्धार के आनंद और उनके लोगों द्वारा उनकी आराधना और सेवा के नए तरीके से प्रसन्न होते हैं, अर्थात, जब वे अपना जीवन और संम्पत्ति जरूरतमदों के साथ बाँटते हैं।

फरीसियों के सभी व्यवस्थावाद और आनंदहीन उपवास और साथ ही साथ अटल परम्परावाद को यीशु मसीह द्वारा शुरू किए गए उद्धार को स्थान प्रदान करना चाहिए। मसीही व्यक्तिगत रूप से अच्छे कारणों के साथ उपवास कर सकते हैं, लेकिन उपवास को फिर से एक आवश्यकता (या प्राचीनों की अटल परम्परा) के रूप में मसीही कलीसिया पर लागू नहीं करना चाहिए। परमेश्वर के राज्य की विशेषता शोक या उपवास नहीं है, बल्कि धार्मिकता, शान्ति और पवित्र आत्मा में आनंद है (रोमियों 14:17-18)।

उद्धार के नए दाखरस (सामग्री) को उद्धार की सभी आशीषों के साथ, धन्यवाद, स्वतत्रंता और परमेश्वर की महिमा के लिए सहज सेवा की नई मशकों (रूपों) में डाला जाना चाहिए।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थनाकरने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "दूल्हे", "पैबन्द लगे हुए वस्त्र" और "मश्कों" का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन संहिता 141,143,145 व 146** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(4) परमेश्वर सर्वज्ञानी है: इब्रानियों 4:13।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 7:14-25।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।